



THE
MENTORING
PROJECT

अपने प्रतिदिन के कामों से
एक विरासत छोड़ना:
आने वाले कल के असर के लिए
आज ही योजना बनाना



AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI
EDITOR: DR. LARRY OATS

अपने प्रतिदिन के कामों से एक विरासत
छोड़ना: आने वाले कल के असर के लिए
आज ही योजना बनाना



लेखक: डॉ. रिचर्ड परहाई

सम्पादक: डॉ. लैरी ओट्स

विषय-वस्तु

परिचय	4
भाग एक: जीवन का भण्डारीपन	6
भाग दो: हम जो मूर्तियाँ बनाते हैं	11
भाग तीन: विश्वास की शब्दावली	16
भाग चार: राज्य के लिए व्यावहारिक समझ	21
भाग पाँच: अच्छे से समाप्त करना	26
निष्कर्ष: पहला कदम आज ही लेना है	29



परिचय

कुछ वर्षों पहले मैं एक छोटी सी बैठक में बैठा हुआ था। यह घर हमारी कलीसिया की एक स्त्री, मार्था का था। वह बानवे वर्ष की आयु की थी। हवा में पुराने कागज और चाय की गंध थी। उन्हें पता था कि उनके पास अधिक समय नहीं बचा है। उन्होंने पास रखी एक मेज पर से एक बाइबल उठाई, जिसका चमड़ा उखड़ रहा था। उसकी जिल्द को साफ चेपी से जोड़ा गया था। उन्होंने मुझसे कहा, “उन लोगों को देने के लिए मेरे पास बस यही है।”

वह पैसों की बात नहीं कर रही थी। उनके पास एक घर और एक छोटा सा बचत खाता था। परन्तु उन्हें उन बातों की चिन्ता नहीं थी। वह अपने पोते-पोतियों के बारे में बात कर रही थी। उस बाइबल के हाशियों पर लिखने में उन्होंने चालीस वर्ष बिताए थे। जब उनका बेटा बीमार था, तो उन्होंने उसमें प्रार्थनाएँ लिखी थीं। जब उनके पति की मृत्यु हुई, तो उन्होंने वे आयतें लिखीं, जिन्होंने उन्हें हिम्मत दी। वह परेशान थी। उन्होंने मुझसे पूछा, “मैं अपने पोते-पोतियों के लिए धार्मिकता से भरी विरासत कैसे छोड़ूँ?”

हम अक्सर विरासत छोड़ने को एक कानूनी समस्या मानते हैं, जिसमें वसीयत लिखना, कर भरना और यह सोचना शामिल होता है कि चीनी मिट्टी वाले वे बढ़िया बर्तन किसे मिलेंगे। ये बातें इसलिए महत्व रखती हैं, क्योंकि हम जिम्मेदार बनना चाहते हैं। परन्तु मूल बात यह नहीं है। जो आप किसी के लिए छोड़ते हैं, उसे धन-सम्पत्ति कहते हैं। जो आप अपने पीछे छोड़ जाते हैं, उसे विरासत कहते हैं।

बाइबल बताती है कि हम यहाँ बस कुछ समय के लिए हैं। हम धुंध की तरह हैं। सुनने में यह बड़ी गहरी बात लग सकती है, परन्तु असल में यह सहायक है। इसका अर्थ है कि हम अपने लिए कोई साम्राज्य बनाने का प्रयास करने से रुक सकते हैं। हमें मशहूर होने की आवश्यकता नहीं है। हमें किसी इमारत पर अपना नाम लिखवाने की आवश्यकता नहीं है। हमें तो बस विश्वासयोग्य रहना है।

इतिहास ऐसे लोगों से भरा पड़ा है, जिन्होंने यही कशमकश महसूस की। आरम्भिक कलीसिया में, लोगों ने अपने विश्वास के लिए अपना सब कुछ गँवा दिया। उनके पास पीछे छोड़ने के लिए बैंक खाते नहीं थे। उनके पास कहानियाँ थीं। उनके पास सुसमाचार था। उन्होंने यह सच आगे पहुँचाया कि यीशु ही प्रभु है। इस संसार को बदलने के लिए बस इतना ही काफी था। आज, हमारे बीच एक दूरी है। हम रविवार को कलीसिया जाते हैं और अनन्तकाल की बात करते हैं। फिर सोमवार को, हम अपने बैंक खाते खोलकर एक अलग तरह का दबाव महसूस करते हैं। हम सुरक्षित रहना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे

बच्चे सुरक्षित रहें। परन्तु यह संसार टूटा हुआ है। धन समाप्त हो सकता है। सेहत खराब हो सकती है। मैं हमेशा अपने कार्यालय में यह संघर्ष देखता हूँ। एक पिता भीतर आता है, जो थका हुआ दिखता है। उसने बीस वर्षों तक सप्ताह में साठ घण्टे काम किया है। उसने अपने परिवार को एक बढ़िया जीवन दिया है। परन्तु उसके बच्चे उसे नहीं जानते। और वे उसके परमेश्वर को भी नहीं जानते। उसे बहुत देर से यह एहसास हुआ कि वह गलत घर बना रहा था।

यह मार्गदर्शिका उसी बात को ठीक करने के बारे में है। यह बाइबल-आधारित भण्डारीपन के बारे में है। यह एक भारी शब्द है। और इसका अर्थ है कि आप किसी ऐसी बात की देखभाल कर रहे हैं, जो किसी और की है। आपका जीवन परमेश्वर का है। आपका धन परमेश्वर का है। यहाँ तक कि आपके बच्चे भी उसी के हैं। हम इस बारे में बात करने जा रहे हैं कि उस तरीके से जीवन कैसे बिताएँ, जो हमेशा बना रहे। हम कठिन प्रश्नों को देखेंगे। हम पैसे और विरासत के बारे में बात करेंगे, परन्तु हम उन्हें क्रूस की दृष्टि से देखेंगे। हम इस बारे में बात करेंगे कि वसीयतनामा कैसे लिखें।

यह मुश्किल काम है, और विश्वास का काम हमेशा ऐसा ही होता है। आपको शायद एहसास होगा कि आपने कुछ गलतियाँ की हैं। मैंने भी की हैं। परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह हमारी खराब योजनाओं से कहीं बढ़कर है। आप आज ही आरम्भ कर सकते हैं। इसके लिए लाखों रुपयों की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए बस एक शान्त हृदय और एक इच्छुक आत्मा की आवश्यकता है। आइए देखें कि यह कैसे काम करता है।

1

जीवन का भण्डारीपन

बाइबल-आधारित भण्डारीपन: यह समझना कि हम किराएदार हैं, मालिक नहीं

जीवन में एक पल ऐसा आता है, जब यह भ्रम आखिरकार टूट जाता है। कभी-कभी यह पल अस्पताल के गलियारे में आता है। कभी-कभी यह पल किसी के अन्तिम संस्कार पर आता है। मेरे साथ ऐसा तब हुआ, जब बच्चे बड़े होकर चले गए और मैं एक कमरे में अकेले खड़ा हुआ था। मैंने चारों ओर दृष्टि करके उन वस्तुओं को देखा, जिन्हें बनाने, सुरक्षित रखने और बनाए रखने के लिए मैंने कड़ी मेहनत की थी। मुझे एहसास हुआ कि उनमें से कितनी कम बातें असल में मेरे नियंत्रण में थीं। और अन्त में उन पर मेरा नियंत्रण नहीं रहा। और उन पर मेरा नियंत्रण तो असल में कभी था ही नहीं। पवित्रशास्त्र लोगों को अधिक देर तक यह दिखावा नहीं करने देता कि यह भ्रम ही सच है।

भूमि के मालिक का भरोसा

जब मैं भजन संहिता 24 अध्याय पढ़ता हूँ, तो देखता हूँ कि यह सीधे मुद्दे की बात करता है। यह स्पष्टता के साथ कहता है: “पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहीवा ही का है, जगत और उस में निवास करनेवाले भी।” केवल अधिकांश बातें नहीं। केवल आत्मिक बातें नहीं। सब कुछ उसका ही है। इसका अर्थ है कि भूमि, संसाधन और जातियाँ सब कुछ उसका ही है। भजन संहिता 24 अध्याय हमारे जीवन के उन निजी पहलुओं के बारे में भी बात करता है, जिन्हें हम बहुत निकट मानते हैं, जैसे हमारा समय, बच्चे, मौके, सेहत और प्रभाव। और इसे पढ़ते समय, आप अपनी श्वास पर ध्यान दें। वह श्वास न तो आपसे आरम्भ होती है और न ही आप पर समाप्त होती है।

यह सच तब तक सुनने में आसान लगता है, जब तक कि यह हमारे जीवन जीने के असली तरीके से नहीं टकराता। हम मालिकों की तरह बात करते हैं। हम मालिकों की तरह योजना बनाते हैं। हम मालिकों की तरह सुरक्षा करते हैं। हम मेरे बच्चे, मेरा धन, मेरा भविष्य, मेरी सेवानिवृत्ति कहते हैं। ऐसी भाषा काम में लाने के लिए पवित्रशास्त्र हमें डाँटता नहीं, बल्कि भण्डारीपन बनाम स्वामित्व के बारे में हमारी सोच को खामोशी के साथ सही करता है। हम तो किराएदार हैं। जो भी अच्छी बातें हमारे हाथों में हैं, वे एक भरोसे के साथ हमें मिली हैं। वे हमें स्वामित्व के कागजों के साथ नहीं मिलीं। वे एक जिम्मेदारी हैं। वे किसी दूसरे की वस्तु की देखभाल करने की बुलाहट के साथ हमें मिली हैं। यह बुलाहट मनुष्य के जीवन का भाव बदल देती है। यह संचय करने को भण्डारीपन में बदल देती है। यह चिन्ता करने को जवाबदेही में बदल देती है। यह उदारता को एक वैकल्पिक गुण से बदलकर विश्वास का स्वाभाविक परिणाम बना देती है।

गलत समझा गया काम

जितना मैं गिन सकता हूँ, उससे अधिक घरों की बैठकों में, मैंने ढलती हुई शामों में ठण्डी कॉफी और बन्द कागजों के साथ, लोगों के चेहरों पर धीरे-धीरे एक एहसास उभरते देखा है। यह कोई बदनामी या शर्मिंदगी नहीं, बल्कि एक शान्त दिखाई देने वाला दुःख है। एक पिता अपने बेटे को एक ऐसा सपना जीते हुए देखता है, जो असल में उसका अपना नहीं है। एक माँ को एहसास होता है कि उसके प्रोत्साहन ने धीरे-धीरे दबाव का रूप ले लिया है। कोई अपनी आवाज ऊँची नहीं करता, परन्तु उसमें एक भारी एहसास होता है कि साथ रहते हुए भी कहीं न कहीं, उस काम को गलत समझा गया था।

तीस वर्षों तक काम किया, कारखाने बदले और वही जूते पहने जिनकी एड़ी घिस गई थी। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ, जिन्होंने मजबूत कम्पनियाँ खड़ी की और यह विश्वास किया कि उनका काम उन्हीं के लिए ही बना था। बाद में, जब जीवन की गति धीमी हुई और बड़ाई मिलना कम हुआ, तो एक मुश्किल प्रश्न सामने आया: क्या सच में मैं ही मुख्य व्यक्ति था, या मैंने बस यह मान लिया था कि मैं ही मालिक हूँ?

अधिकांश लोग ध्यान नहीं देते, परन्तु विफल होने में पीड़ा नहीं होती। पीड़ा तो तालमेल न होने में होती है। परमेश्वर उद्देश्य के साथ जिम्मेदारी भी देता है। वह प्रभाव डालने में लापरवाही नहीं करता। बच्चे, संसाधन, कौशल और मौके अचानक से नहीं मिलते हैं। वे दिए गए काम होते हैं। और उन कामों के साथ जिम्मेदारी आती है—जो घबराहट वाली नहीं, बल्कि जवाबदेही वाली होती है।

जब हम काम को गलत समझते हैं, तो सब कुछ आवश्यकता से अधिक भारी लगने लगता है।

खेत में काँटे

उत्पत्ति 3 अध्याय को देखिए। यह रोचक इसलिए है, क्योंकि पवित्रशास्त्र असल में काम को श्राप नहीं देता—वह काम की सरलता को श्राप देता है। जिसका अर्थ वह काँटे हैं, जो लगातार मिलने वाली रुकावटें हैं। और यह ऐसा है कि जैसे भूमि भौतिक रूप से आपको पीछे धकेल रही हो। और सच कहूँ तो? यह एक ऐसी विशेष बात है, जिसे अधिकांश लोग... बस अनदेखा कर देते हैं, और वे धन के बारे में बाइबल की आयतों में भी ऐसा ही करते हैं।

पसीना बहाना। यही से यह बात आखिरकार इस समीकरण में शामिल हुई।

आज बाजार में भी आपको इसी तरह की कशमकश देखने को मिलती है। राजस्व को उन रेखाओं को देखें, जो सीधी नहीं रहती—वे ऊपर-नीचे होती रहती हैं। ऐसे पूर्वानुमान भी सामने आते हैं, जो आपके हाथ से फिसल जाते हैं। आपको वह सौदा याद है? वही सौदा, जो आपको एकदम पक्का लग रहा था, परन्तु तीसरे सप्ताह तक आपने उसे पूरी तरह बिखरते हुए देखा। योजना बनाते समय ऐसा लगता है कि जैसे आप किसी ऐसी बात को धक्का मार रहे हैं, जो नियंत्रण में आने से साफ इन्कार कर रही है। भूमि पलटवार करती है और वह ऐसा ही करती है।

और वह कशमकश क्या है? वह मनुष्य के हृदय पर कुछ कर देती है। यह केवल आपको थकाती ही नहीं—बल्कि असल में यह आपके काम करने के तरीके को ही बदल देती है, और अक्सर अनन्तकाल वाले दृष्टिकोण से हमारे जीवन बिताने के तरीके में रुकावट डालती है।

अपने प्रतिदिन के कामों से एक विरासत छोड़ना

और मुख्य बात यह है कि: जैसे ही हमारे मन के अनुसार परिणाम नहीं मिलते, हम बातों पर अपनी पकड़ मजबूत करने लगते हैं। अधिक जमा करो। अधिक सुरक्षा करो। हम स्वयं से कहते हैं कि हम उदारता को तब तक टाल रहे हैं, जब तक “परिस्थितियाँ स्थिर न हो जाएँ।” यह सुनने में अनुशासित लगता है न? और यह सुनने में विवेकपूर्ण भी लगता है।

परन्तु सच बोलूँ तो? कभी-कभी यह केवल डर होता है। यह बस एक दिखावटी डर होता है।

केन को यह बात समझ आ गई। फ़िरौन के पास बेहिसाब ताकत और संसाधन थे, फिर भी वह उन जंजीरों को लगातार कसता ही जा रहा था। लूका 12 अध्याय में उस धनवान मूर्ख की ही बात लें—उसने बड़ी-बड़ी बखारियाँ बनाई और इसे “रणनीतिक दूरदर्शिता” का नाम दिया। बाइबल असल में योजना बनाने का उपहास नहीं उड़ाती। बाइबल ऐसा बिलकुल भी नहीं करती। वह तो बस उस गहरी बेचैनी को उजागर करती है, जिसे हम लम्बे समय की सोच का नाम देकर ढाँपने का प्रयास करते हैं।

“मैं तो बस जिम्मेदारी निभा रहा हूँ।”

“मैं तो भविष्य के बारे में सोच रहा हूँ।”

“आप कभी नहीं जान पाते कि क्या हो सकता है।”

कभी-कभी, यह वास्तव में समझदारी की बात होती है। परन्तु बाकी समयों में, यह केवल एक ऐसा बहाना होता है—जो हमने हाल के आर्थिक समाचारों के आधार पर बना लिया होता है।

सदियों से पाप हमें यही घिसा-पिटा सबक सिखाता आ रहा है कि: संचय करना, सुरक्षित रहने के बराबर है। और उदारता का क्या? वह उजागर करने के बराबर है।

यह गणित अविश्वसनीय रूप से आश्चर्य करने वाली सुनाई पड़ती है—कम से कम तब तक, जब तक कि आप असल में इसके मूल सूत्र की जाँच करना आरम्भ नहीं करते।

आत्म-सुरक्षा की जड़

खेत में उगे उन काँटों को देखिए। वे केवल काम को ही कठिन नहीं बनाते, बल्कि उससे कहीं अधिक करते हैं। वे हमें रक्षात्मक बना देते हैं। वे सुझाव देते हैं कि कमी ही सब कुछ है, और उदार होना केवल नादानी है। एक बार जब हम इस पर विश्वास कर लेते हैं, तो भण्डारीपन समाप्त हो जाता है और आत्म-सुरक्षा के अलावा कुछ नहीं रह जाता।

उत्पत्ति की पुस्तक इसे कभी भी चरित की कोई मामूली कमी के रूप में प्रस्तुत नहीं करती। वह ऐसा बिलकुल भी नहीं करती। वह इसे बलवे के सीधे परिणाम के रूप में प्रस्तुत करती है। यह एक सीधा-सादा, परन्तु कठोर सौदा है कि: जब परमेश्वर पर भरोसा टूटता है, तो “सामान” और सम्पत्ति पर भरोसा उसकी जगह ले लेता है।

इसी कारण से धन, या बाइबल में बताई गई विरासत, या उत्तराधिकार के बारे में हमारी बातचीत कभी भी केवल आर्थिक नहीं होती। वे गहराई से ईश-वैज्ञानिक होती हैं। और अन्त में, वे उस एक बात को प्रकट करती हैं, जिसे हम छिपाने का

प्रयास करते हैं कि: कोई व्यक्ति असल में क्या विश्वास करता है कि उनकी सुरक्षा कहाँ से होती है। धन का प्रबन्ध करने के बाइबल-आधारित सिद्धान्तों को समझना संख्याओं के बारे में नहीं है; यह इस बारे में है कि हम कोई गढ़ बना रहे हैं या पुल।

अच्छा प्रबन्धक

यीशु ने शायद ही कभी स्वामित्व के बारे में बात की हो। असल में उसने स्वामित्व के बारे में बात की ही नहीं। उसने तो वास्तव में प्रबन्धन के बारे में बात की थी, जिसमें विश्वासयोग्य दास थे, भण्डारी थे, चौकस रहने वाले मजदूर थे। वह हमेशा उन लोगों की बात करता था, जिन्हें ऐसे संसाधन सौंपे गए थे, जो असल में उनके नहीं थे—और वे ऐसे संसाधन थे, जिनका उन्हें एक दिन लेना देना था। यह एक बदलाव है। निश्चय ही, यह बदलाव छोटा है, परन्तु बहुत निर्णायक है। यह “मैं क्या रख सकता हूँ?” से काँटे को आगे बढ़ाकर “मेरी देखभाल में क्या रखा गया है?” पर ले आता है। और सच कहूँ तो? यह एक प्रश्न सब कुछ बदल देता है।

अब एक अच्छा प्रबन्धक भविष्य को अनदेखा नहीं करता। वह ऐसा बिलकुल भी नहीं करता। वह उसके लिए तैयारी करता है। परन्तु इसमें अन्तर यह है कि: वह खुले हाथों से तैयारी करता है, न कि उन मुठियों से, जिन्हें बन्द रखने की हमें आदत है। वह योजना बनाता है, परन्तु वह ऐसा सब कुछ अपने नियंत्रण में रखने के धकाऊ दिखावे के बिना करता है। वह बचत तो करता है, परन्तु बचत के पीछे के उद्देश्य को कभी अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देता।

वह एक बुनियादी बात समझता है—कि प्रावधान बस उसी पर समाप्त न हो जाए, बल्कि उसके द्वारा आगे बढ़े। यह सब बातों को अन्त नहीं है। और यहीं पर विरासत का प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है। यह मरने के बाद भी नियंत्रण बनाए रखने की कोई चालाकी भरी रणनीति नहीं है। ऐसा तो बिलकुल भी नहीं है। यह बस भण्डारीपन का ही एक विस्तार है—जो अन्त में भण्डारी से भी अधिक समय तक बना रहता है।

विरासत और प्रभाव

पवित्रशास्त्र विरासत के बारे में बात करता है, और वह ऐसा बिना किसी उलझन के करता है। यह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रबन्ध करने पर किसी को लज्जित नहीं करता। असल में, जहाँ यह हमें अक्सर सम्पत्ति पर भरोसा न करने की चेतावनी देता है, वहीं यह सोच-समझकर की गई तैयारी की महत्व की पुष्टि भी करता है। यदि आपको इन विचारों के बीच कोई तनाव महसूस हो, तो ऐसा जान-बूझकर किया गया है। परमेश्वर केवल इस बात की चिन्ता नहीं करता कि पीछे क्या छोड़ा गया है, बल्कि वह उस हृदय की भी चिन्ता करता है—वह उस सच्चे, ईमानदार हृदय की भी चिन्ता करता है—जो दान देने के काम को सबसे पहले आकार देता है।

मैंने ऐसा होते देखा है। मैं ऐसे परिवारों के साथ बैठा हूँ, जो इसलिए टूट गए, क्योंकि विरासत का उपयोग दबाव बनाने के लिए किया गया था। एक पल के लिए उस नियमबद्ध प्रेम की कल्पना कीजिए, जो कानूनी दस्तावेजों में लिखा हुआ है। यह नियंत्रण का एक ऐसा तरीका है, जो किसी मनुष्य के जीवन के बाद भी बना रहना चाहता है। यह भण्डारीपन नहीं है। यह बस एक लम्बे समय तक बने रहने वाला डर है।

अपने प्रतिदिन के कामों से एक विरासत छोड़ना

दूसरी ओर, मैं ऐसे परिवारों से भी मिला हूँ, जो इस प्रक्रिया से और मजबूत हुए। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि कई वर्षों तक खामोशी के साथ उदारता दिखाई गई थी। यह एकदम सही नहीं था, या यह हमेशा फिजूलखर्ची नहीं था, परन्तु यह लगातार जारी रहा। इन बच्चों ने जल्दी ही सीख लिया कि धन एक साधन है, और वह कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जिसकी उपासना की जाए। साधनों का उपयोग किया जाता है। परमेश्वर और लोगों से प्रेम किया जाता है। उन्होंने देखा कि वह प्रबन्ध असली था, परन्तु वे यह भी समझते थे कि परमेश्वर उससे भी अधिक असली है।

तालमेल और विश्राम

इसे इस तरह सोचिए। एक सच्चा और विश्वासयोग्य प्रबन्धक, भारी प्रश्न पूछने के लिए अन्त तक प्रतीक्षा नहीं करता। और सच कहूँ तो? यह किसी तरह की नैतिक पूर्णता पाने का प्रयास भी नहीं है। ऐसा बिलकुल भी नहीं है। यह तो बस... विश्वासयोग्यता की बात है। यह एकदम साफ और सीधी बात है। आपको देखना होगा कि अभी आपको हाथों में क्या है और पूछना होगा: “क्या मैं इसका उपयोग असल में उस तरह से कर रहा हूँ, जैसी उस व्यक्ति की मंशा थी, जिसने मुझे सबसे पहले यह दिया था?” और सबसे महत्वपूर्ण बात—जिसे हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं: “क्या मैं अगली पीढ़ी को परमेश्वर पर भरोसा करना सिखा रहा हूँ... या मैं उन्हें बस बातों के उस ढेर पर भरोसा करना सिखा रहा हूँ, जो मैं अपने पीछे छोड़ जाऊँगा?”

उन प्रश्नों पर ध्यान दीजिए? ये किसी पर पथराव करने या आपको दोषी महसूस कराने के लिए नहीं हैं। ये तो उसके आसपास भी नहीं हैं। ये तो बस बातों में स्पष्टता पाने का एक निमंत्रण हैं। क्योंकि यदि हम एकदम सच-सच कहें, तो भण्डारीपन का अर्थ दोष लगाना नहीं, बल्कि सही तालमेल बैठाना है। इसका अर्थ आज के समय में इस तरह जीवन बिताना है कि दस-बीस वर्ष बाद जब आप पीछे मुड़कर देखें, तो असल में वह सब सही लगे। इसका अर्थ यह समझना है कि अन्त में, चाबियाँ वापस सौंपनी ही होंगी। और अन्त में जब वह पल आता है, तो एक विश्वासयोग्य किराएदार को घबराने की आवश्यकता नहीं पड़ती। वह बस... विश्राम कर सकता है। वह विश्राम इसलिए कर पाता है, क्योंकि वह अपने भीतर में जानता है कि वह भूमि कभी उसकी रक्षा करने के लिए थी ही नहीं। वह तो बस उसकी देखभाल करने के लिए थी।

2

हम जो मूर्तियाँ बनाते हैं

आर्थिक विरासत की योजना बनाने में मूर्तियों पर जयवन्त होना

हमारे भीतर कुछ ऐसा है, जो कभी समाप्त नहीं होना चाहता। हम जानते हैं कि जीवन छोटा सा है। हम सारे सच जानते हैं। हम अन्तिम संस्कारों में जाते हैं। हम सारी बातें सही-सही कहते हैं। परन्तु फिर भी, अपने भीतर में, हम इस बात का विरोध करते हैं कि हमारा समय सीमित है। हम इस विचार से संघर्ष करते हैं कि हमारे बिना भी यह संसार आराम से चलता रहेगा।

इसलिए, हम निर्माण करते हैं। हम धन बचाते हैं। हम काम-धंधे आरम्भ करते हैं। हम अपनी प्रतिष्ठा और ऐसी बातें बनाने में लगे रहते हैं, जो हमारे बाद भी टिकी रहें। इनमें से कोई भी बात अपने आप में गलत नहीं है। काम करने या योजना बनाने को पवित्रशास्त्र गलत नहीं ठहराता। परन्तु वह हमें चेतावनी देता है कि जब अच्छी बातों को वह महत्व मिलने लगता है, जो केवल परमेश्वर को मिलना चाहिए, तब क्या होता है। तभी वे बातें मूर्तियाँ बन जाती हैं। और ये कोई साफ-साफ दिखने वाली मूर्तियाँ भी नहीं हैं। वे सम्मानजनक लगती हैं। वे समझदारी भरी और जिम्मेदार लगती हैं। ये ऐसी मूर्तियाँ हैं, जिनके बारे में यदि कोई पूछे, तो आप उन्हें आसानी से सही ठहरा सकते हैं।

जब हम विरासत के बारे में बाइबल की आयतें देखते हैं, तो हमें पता चलता है कि एक सार्थक जीवन का निर्माण जमा करने से नहीं, बल्कि यह विश्वास को आगे बढ़ाने से होता है। मसीही जीवन के लक्ष्यों को बस संचय करने से श्रमित कर देना आसान है, परन्तु सुरक्षा और हैसियत जैसी “सम्मानजनक” बातें अक्सर इस सच को छिपा देती हैं: कि हमेशा बने रहने की हमारी अभिलाषा असल में अनन्तकाल की भूख है।

आर्थिक सुरक्षा का मिथक: धन के बजाय परमेश्वर पर भरोसा करना

यीशु लूका 12 अध्याय में एक ऐसे मनुष्य की कहानी सुनाता है, जिसके पास कुछ ऐसा था, जिसे अधिकांश लोग “अच्छी समस्या” ही कहेंगे। उसकी भूमि से अपेक्षा से कहीं अधिक फसल उत्पन्न हुई थी। उसकी बखारियों का क्या हुआ? वे पूरी तरह से भरी हुई थीं। अब, वह चोरी नहीं कर रहा था। वह किसी को धोखा नहीं दे रहा था। किसी भी पैमाने पर देखें, तो वह कुछ भी गैर-कानूनी या अनैतिक नहीं कर रहा था। बस... उसे यह नहीं पता था कि कब रुकना है।

और फिर वह स्वयं से बात करता है। उसकी बातों पर ध्यान दीजिए। यह बात महत्व रखती है। वह एक बार भी कभी परमेश्वर से बात नहीं करता। वह कभी रुककर यह नहीं पूछता कि यह बहुतायत असल में *किसलिए* है। उसके पास बस एक ही प्रश्न होता है: “अब मैं क्या करूँ, क्योंकि मेरे पास अपनी फसल रखने की कोई जगह ही नहीं है।” और वह इसका उत्तर ठीक वैसे ही देता है, जैसे शायद हममें से अधिकांश लोग देते। बड़ी-बड़ी बखारियाँ बनाओ। और भी अधिक भण्डारगृह

अपने प्रतिदिन के कामों से एक विरासत छोड़ना

बनाओ। और अधिक नियंत्रण रखो। फिर वह अपने मन की बात ऊँचे स्वर से कहता है: “हे मेरे प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह।” उसे सच में लगता था कि उसने अपने प्राण को सुरक्षित कर लिया है।

परन्तु परमेश्वर उसे मूर्ख कहता है। इसलिए नहीं कि उसने कोई योजना बनाई—बल्कि इसलिए कि उसने उस योजना पर भरोसा किया। उसने विश्वास कर लिया कि बखारियों में भरा अनाज उसके जीवन की सुरक्षा कर सकता है। उसे लगता था कि इस बहुतायत से शान्ति खरीदी जा सकती है। और इस सोच का क्या करें? यह सोच आज भी हर जगह मिलती है। लोग आमतौर पर इसे ऊँचे स्वर से नहीं कहते, परन्तु वे ऐसे जीवन बिताते हैं, जैसे कि यही परम सत्य हो। यदि मैं बस काफी आगे निकल जाऊँ। यदि मैं बस पर्याप्त बचत कर लूँ। यदि मैं बस इस जोखिम को समाप्त कर दूँ। तब—और केवल तभी—मैं विश्राम करूँगा।

परन्तु असल में विश्राम कभी ऐसे नहीं मिलता। बस... लक्ष्य आगे खिसकता जाता है। सुरक्षा हमेशा और अधिक की माँग करती है। मैं ऐसे लोगों के साथ बैठा हूँ, जिनके पास आवश्यकता से कहीं अधिक था, और फिर भी वे निरन्तर चिन्ता में जीवन बिताते थे। और मैं ऐसे लोगों के साथ भी बैठा हूँ, जिनके पास बहुत कम था—और वे चैन की नींद सोते थे। वहाँ कभी भी गिनती का अन्तर नहीं था। वहाँ इस बात का अन्तर था कि वे अपने भविष्य के लिए किस बात पर या किस व्यक्ति पर भरोसा करते थे। यीशु यह नहीं कह रहा है कि योजना बनाना मूर्खता की बात है। परन्तु वह कह रहा है कि अपनी जमा की गई बहुतायत पर भरोसा करना मूर्खता की बात है। बड़ी-बड़ी बखारियाँ असल में डर को दूर नहीं करती। वे बस डर को यह बताती हैं कि उसे कहीं रहना है।

“अपने दम पर मिली” सफलता का जाल

यदि डर सुरक्षा की मूर्ति बनाता है, तो घमण्ड “अपने दम पर मिली” सफलता की मूर्ति बनाता है। “इसे मैंने कमाया है।” यह सुनने में सही लगता है न? यह सुनने में उचित लगता है, और यह जिम्मेदारी से भरा भी लगता है। वैसे भी, पवित्रशास्त्र कड़े परिश्रम का सम्मान करता है। पवित्रशास्त्र कभी आलस्य की बड़ाई नहीं करता। तो फिर, समस्या क्या है?

समस्या प्रयास करना नहीं है। समस्या यह भूल जाना है कि उस प्रयास का हर एक हिस्सा असल में कहाँ से आया है। “अपने दम पर मिली” सफलता का यह विचार एक बन्द व्यवस्था को मानता है। यह मेरी बुद्धि, मेरा अनुशासन, और मेरे जोखिम की बात करता है। परन्तु पवित्रशास्त्र उस कहानी को कभी भी अकेले खड़ा नहीं रहने देता। उस व्यवस्था का हर हिस्सा उपयोग किए जाने से पहले ही मिला था। आपने स्वयं को अपना मस्तिष्क नहीं दिया। आपने अपने मौके स्वयं नहीं चुने। आपने अपने जन्म का समय या जगह निर्धारित नहीं की। आपने निश्चित रूप से उन सभी आपदाओं को नहीं रोका, जो आपके साथ नहीं हुई। आपने एक-एक वर्ष करके अपनी सेहत भी स्वयं बनाए नहीं रखी।

अनुग्रह केवल पापियों का उद्धार करने वाली बात नहीं है। यह वही बात है, जो सब कुछ को एक साथ जोड़े रखती है। मैंने लोगों को सच्चे आभारीपन वाले भाव से आरम्भ करते देखा है, और फिर, धीरे-धीरे, वे हक जताने लगते हैं। यह अचानक से नहीं होता। यह खामोशी के साथ होता है। समय के साथ-साथ, परमेश्वर प्रबन्ध करनेवाले से बदलकर बस एक पृष्ठभूमि

में मानी जाने वाली बात बन जाता है। निश्चय ही धन्यवादिता शब्दों में तो रहती है, परन्तु निर्भरता कहाँ गई? वह हृदय से गायब हो जाती है।

और जब सफलता आपकी कीमत का सबूत बन जाती है, तो उदारता... डरावनी सी लगने लगती है। दान देने पर ऐसा लगता है कि जैसे आप स्थिरता खो रहे हैं। बाँटने पर ऐसा लगता है कि जैसे आप स्वयं को मिटा रहे हैं। मन में तुलना आने लगती है, और उसके ठीक पीछे दोष लगाने की भावना आ जाती है। पवित्रशास्त्र एक सीधे और असहज करने वाले प्रश्न से इन सब बातों को काट देता है: “आपके पास ऐसा क्या है, जो आपको मिला नहीं है?” इस प्रश्न का उद्देश्य आपके प्रयास का अपमान करना नहीं है। इसका उद्देश्य उसे उसकी सही जगह पर रखना है। या तो सब कुछ अनुग्रह है—या कुछ भी नहीं है। इसमें कोई बीच की श्रेणी नहीं है, जहाँ हम बिना किसी दुष्परिणाम के श्रेय ले सकें। घमण्ड सफलता को मीठा नहीं बनाता। यह बस उसे भारी बना देता है। आपको उसका बचाव करना पड़ता है। उसकी रक्षा करनी पड़ती है। और यह स्वतंत्रता नहीं है। यह बस दबाव है।

इस प्रश्न का उद्देश्य आपके प्रयास का अपमान करना नहीं है; इसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि बाइबल विरासत और हमें मिले वरदानों के बारे में क्या कहती है। यह मसीही धन-सम्पत्ति की योजना बनाने की नींव है, जो हमें “अपनी” बातों की रक्षा करने से हटाकर “उसकी” अर्थात् परमेश्वर की बातों का भण्डारीपन करने की ओर ले जाती है। या तो सब कुछ अनुग्रह है—या कुछ भी नहीं है। इसमें कोई बीच की श्रेणी नहीं है, जहाँ हम बिना किसी दुष्परिणाम के श्रेय ले सकें। घमण्ड सफलता को मीठा नहीं बनाता। यह बस उसे भारी बना देता है। आपको उसका बचाव करना पड़ता है। उसकी रक्षा करनी पड़ती है। और यह स्वतंत्रता नहीं है। यह बस दबाव है।

हम क्यों चाहते हैं कि हमें याद रखा जाए

उस सारी सुरक्षा और सफलता के नीचे एक और भी बुनियादी बात है। हम चाहते हैं कि हमारे जाने के बाद भी हम महत्वपूर्ण बने रहें। हम आमतौर पर इसे इस तरह नहीं कहते। हम “विरासत” की या “प्रभाव” की बात करते हैं। परन्तु अक्सर क्या होता है? असल में हम जिस बात से जूझ रहे होते हैं, वह भुला दिए जाने का डरावना भय है।

इसलिए, हम स्वयं को उन बातों से जोड़ लेते हैं, जो हमसे अधिक समय तक बनी रहती हैं। इमारतें, बैंक खाते, नाम—कोई और ऐसी बात जो हमारे जाने के बाद भी याद रखी जाए। पवित्रशास्त्र इस आवेग को समझता है—परन्तु वह इसे हमारे जीवन पर हावी नहीं होने देता। बाइबल असल में कभी यह वादा नहीं करती कि आपका नाम इस पृथ्वी पर हमेशा के लिए बना रहेगा। वह इससे कहीं बेहतर वादा करती है: कि आपका जीवन मसीह के साथ सुरक्षित है। कि आपका भविष्य सुरक्षित है, भले ही यहाँ आपकी यादें मिट जाएँ। यादें नहीं, परन्तु पुनरुत्थान ही असली मसीही आशा है। क्या आप अपनी बातों के द्वारा हमेशा जीवित रहने का प्रयास कर रहे हैं? यह बहुत थका देने वाला काम है। यह आशीष को बोझ में बदल देता है। इसके कारण किसी बात को छोड़ने पर ऐसा लगता है, जैसे आप दो बार मर रहे हों। सुसमाचार एक अलग रास्ता दिखाता है। आपको स्वयं को बचाने की आवश्यकता नहीं है। आप पहले से ही सुरक्षित हैं। इससे हमारा दृष्टिकोण बदलता है और हम विश्वास के साथ जीवन समाप्त करने की ओर बढ़ते हैं, और हम जानते हैं कि जीवन के अन्त में बैंक खाते का रुपया नहीं, बल्कि हमारे भरोसे की गहराई महत्व रखती है। जब हम अपनी अनन्तकाल की सुरक्षा के प्रश्न को सुलझा लेते हैं, तो

अपने प्रतिदिन के कामों से एक विरासत छोड़ना

अन्त में हम अमरता पाने का निराशाजनक प्रयास के बजाय, स्वतंत्रता के साथ यह पूछ सकते हैं, “क्या अपने बच्चों के लिए धन छोड़ना बाइबल के अनुसार सही है?”

क्या अपने बच्चों के लिए धन छोड़ना बाइबल के अनुसार सही है?

अक्सर यहीं पर माहौल शान्त हो जाता है। लोग पीछे की ओर लेट जाते हैं। बातचीत बहुत अधिक... सम्मिलित होने लगती है। और यह अच्छे कारण से होता है। पवित्रशास्त्र यहाँ हमें कोई आसान सा, या सबके-लिए-एक-ही-माप वाला नियम नहीं बताता। वह हमें बुद्धि देता है, जो सच कहें तो कहीं अधिक मुश्किल काम है।

बाइबल अगली पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने की बात की पुष्टि करती है। अनदेखा करना कभी भी आत्मिक नहीं होता। जिम्मेदारी कोई वैकल्पिक बात नहीं है। माता-पिता को देखरेख करने की बुलाहट दी गई है। परन्तु पवित्रशास्त्र इस बारे में भी बड़ी ईमानदारी से बात करता है कि जब बिना किसी तैयारी के सम्पत्ति को आगे सौंपा जाए, तो यह कितना खतरनाक होता है। धन आशीष भी दे सकता है। और यह सब कुछ बिगाड़ भी सकता है, और विशेष रूप से ऐसा तब होता है, जब यह सही समझ, या अनुशासन या या विश्वास के बिना मिले।

जब हम पूछते हैं कि क्या विरासत छोड़ना बाइबल के अनुसार सही है, तो इसका उत्तर हाँ होता है, परन्तु यह हमेशा अपने बच्चों के लिए आत्मिक विरासत छोड़ने की अवधारणा से जुड़ा होता है। और मैंने यह देखा है कि—माता-पिता अपने बच्चों का जीवन “आसान” बनाने के लिए जी-जान लगा देते हैं, और इसका परिणाम केवल यह होता है कि बच्चे किसी असली कठिनाई का सामना करने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं हो पाते। उन्हें आराम तो मिल जाता है, परन्तु चरित्र का क्या करें? वह वैसा नहीं बन पाता। मैंने ऐसे माता-पिता भी देखे हैं, जो दान तो कम देते हैं, परन्तु उदारता के साथ जीवन जीते हैं, और अपने बच्चों को उदाहरण से सिखाते हैं कि धन कोई देवता नहीं, केवल एक साधन है। ऐसे बच्चे संघर्ष के बिना बड़े नहीं हुए, परन्तु वे इस बात को अच्छे से जानते हुए बड़े हुए कि जब संघर्ष सामने आए, तब कहाँ जाना है।

इसलिए, प्रश्न केवल यह नहीं है कि धन छोड़ना बाइबल के अनुसार सही है या नहीं। असली प्रश्न यह है कि: ऐसा करने से कैसे लोग तैयार हो रहे हैं? विरासत के बारे में बाइबल क्या कहती है? यह बताती है कि एक “भला मनुष्य अपने बच्चों के बच्चों के लिए एक विरासत छोड़ता है,” परन्तु यदि उस विरासत में यह न बताया गया हो कि उसका उपयोग कैसे करना है, तो वह बेकार है।

विरासत कुछ न कुछ सिखाती है, चाहे आप ऐसा करना चाहें या न चाहें। यह सिखाती है कि आपको किस बात से डर लगता था। आपने किस बात पर विश्वास किया कि वह असल में आपके बच्चों को सुरक्षित रखेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पैसा प्रेम दिखाने के काम आ सकता है। परन्तु यह कठिन कामों से बचने का एक तरीका भी हो सकता है, जैसे कि बनाने का काम, बातचीत का काम, जीवनभर के लिए विश्वास का आदर्श बनने का काम। पवित्रशास्त्र आपको कोई सूत्र नहीं थमाता। वह बस आपसे धार्मिकता से भरी विरासत पर ध्यान देने को कहता है।

हमारी मूर्तियों के लिए हमें क्या कीमत चुकानी पड़ती है

मूर्तियाँ हमेशा सुरक्षा का वादा करती हैं, परन्तु वे कभी भी सुरक्षा नहीं देती हैं। सुरक्षा कहती है, “यदि आपके पास बहुत कुछ है, तो आप चैन से रहेंगे।” और सफलता कहती है, “यदि आप बहुत कुछ हासिल कर लेते हैं, तो आपको महत्व मिलेगा।” और विरासत कहती है, “यदि आप अपने पीछे बहुत कुछ छोड़ जाते हैं, तो आप असल में कभी नहीं जाएँगे।”

इनमें से कोई भी वादा असल में सच साबित नहीं होता। इसके बजाय, वे खामोशी के साथ हृदय को परमेश्वर के अलावा किसी और बात पर भरोसा करना सिखाते हैं। और एक बार ऐसा हो जाए? तो उदारता जोखिम भरी लगने लगती है। निर्भरता कमजोरी लगने लगती है। विश्वास... बस सैद्धान्तिक सा लगने लगता है। यीशु इन मूर्तियों को इसलिए नहीं तोड़ता, क्योंकि वह आपके आनन्द का विरोधी है। वह उन्हें इसलिए तोड़ता है, क्योंकि वे आनन्द को सम्भाल नहीं सकतीं।

सुसमाचार आपसे काम करना, बचत करना या आवश्यकताएँ पूरी करना बन्द करने के लिए नहीं कहता। यह आपसे यह कहता है कि आप इन बातों से स्वयं का उद्धार करने के लिए विनती करना बन्द कर दें। आपको ऐसा कुछ बनाने की आवश्यकता नहीं है, जो हमेशा तक बना रहे—आपको पहले ही पुनरुत्थान का वादा मिल चुका है। आपको भविष्य को सुरक्षित करने की आवश्यकता नहीं है—परमेश्वर ने उसे पहले ही सम्भाल रखा है। आपको अपनी योग्यता साबित करने की आवश्यकता नहीं है—मसीह ने ऐसा पहले ही कर दिया है। जब यह सच धीरे-धीरे समझ में आता है, तो पकड़ ढीली होने लगती है। डर कम हो जाता है। दान देना सम्भव हो जाता है। विश्राम करना गैर-जिम्मेदारी वाला नहीं लगता। और जिन मूर्तियों का हमने कभी बचाव किया था? वे हमारी यादों की तुलना में कहीं अधिक छोटी लगने लगती हैं।

3

विश्वास की शब्दावली

आत्मिक विरासत: अपने परिवार तक सुसमाचार कैसे पहुँचाएँ

हर घर कुछ न कुछ सिखाता है। और वह सचमुच ऐसा तब भी करता है—जब आप सिखाने के लिए कुछ विशेष नहीं कर रहे होते। और बच्चों का क्या? वे तो हमेशा वहाँ होते हैं, सुनते हैं, देखते हैं और बस उस जगह के “लहजे” को अपने में सोखते हैं। वे बस यह देखते हैं कि खाने की मेज पर किन बातों के बारे में आसानी से बात होती है, और—शायद इससे भी अधिक महत्वपूर्ण—किन बातों का कभी उल्लेख नहीं होता, इससे वे समझ जाते हैं कि असल में कौन सी बात महत्व रखती है।

वे यह देखते हैं कि तनाव में या गड़बड़ होने पर कौन सी बात आपके निर्णयों को प्रभावित करती है, और इससे वे सीख जाते हैं कि असल में कौन सी बात महत्व रखती है। ठीक इसी तरह से विश्वास आगे बढ़ता है। या... इसी रीति से यह आगे नहीं बढ़ता। बात सबसे पहले औपचारिक सीख की नहीं है; यह भाषा की बात है। यह इस बारे में है कि आप अपनी चारदीवारी में किस बात को “सामान्य” मानते हैं। देखिए, आप एक घर, अच्छी-खासी बचत और 10 वर्ष की एक बेहतरीन योजना पीछे छोड़ सकते हैं—और फिर भी, जब जीवन में मुश्किल दौर आए, तो वे बच्चे पूरी तरह भटक सकते हैं। या फिर, आप भौतिक रूप से बहुत कम बातें पीछे छोड़ सकते हैं, और फिर भी उन्हें जीवन के कठिन समय में मजबूती से खड़े रहने की जगह दे सकते हैं।

पवित्रशास्त्र में हमेशा से उस दूसरी बात पर अधिक जोर दिया गया है। विरासत किसी एक बड़े और वीरतापूर्ण पल में नहीं बनती। यह धीरे-धीरे उन शब्दों से बनती है, जो बार-बार, दिन-प्रतिदिन उपयोग किए जाते हैं। लगातार किया गया यही निवेश एक सच्ची मजबूत नींव बनाता है। जब हम उन बातों पर ध्यान देते हैं, जो पीढ़ी-से-पीढ़ी चलने वाली सम्पत्ति के बारे में बाइबल बताती है, तो यह साफ हो जाता है कि सबसे बड़ी सम्पत्ति वे मूल्य हैं, जो घर में ही रचे-बसे होते हैं।

अपने बच्चों को संसाधनों के उपयोग करने और उनकी उपासना करने के बीच का अन्तर सिखाना, बाद में विरासत को लेकर होने वाले झगड़ों से बचने का एक मुख्य तरीका है; यदि वे उपहार से अधिक उसे देने वाले का आदर करते हैं, तो वह उपहार उनमें फूट नहीं डालेगा। और इससे इस भीतरी तनाव का भी उत्तर मिलता है कि क्या भविष्य के लिए सम्पत्ति जमा करना पाप है? और इसका उत्तर इस बात में छिपा है कि क्या वह सम्पत्ति डर की बन्द मुट्ठी है या परिवार के उद्देश्य का एक साधन है।

व्यवस्थाविवरण 6 अध्याय और जीवन की लय

आप जानते हैं कि जब आप सच में व्यवस्थाविवरण 6 अध्याय पर ध्यान देते हैं, तो यह वास्तव में किसी कठोर कलीसियाई कार्यक्रम जैसा सुनाई नहीं पड़ता है, है न? मुझे तो यह... एक आम, अस्त-व्यस्त से दिन जैसा सुनाई पड़ता है। आप चल-फिर रहे हैं। आप बैठे हुए हैं। आप लेटे हुए हैं, और फिर उठ रहे हैं। यही तो वह जीवन है, जो असल में उसी पल में जीया जा रहा है। और परमेश्वर के वचनों का क्या? उन्हें किसी ऊँची दराज पर उन “विशेष” धार्मिक पलों के लिए नहीं रखा जाना चाहिए। ऐसा न करें, बल्कि उन्हें तो उबाऊ, आम पलों में भी शामिल किया जाना चाहिए।

और इससे आपको एक बहुत बड़ी बात पता चलती है कि: विश्वास का अर्थ वहीं जीवन बिताना है, जहाँ इसे असल जीवन में जीया जाता है। ऐसा केवल तभी न हो, जब आप कलीसिया में हों। और निश्चित रूप से ऐसा केवल उन भारी-भरकम, जबरदस्ती की “औपचारिक” बातचीत के दौरान न हो। मैं गाड़ी में, रसोई की मेज पर, सोने से ठीक पहले—बाकी सब कामों के बीच के उन छोटे-छोटे, अजीब पलों में होने वाली बातचीत के बारे में कह रहा हूँ। विरासत तब बनती है, जब परमेश्वर का उल्लेख स्वाभाविक रूप से होता है—और ऐसा विशेष रूप से इसलिए होता है, क्योंकि वह सचमुच आपकी विचार प्रक्रिया का हिस्सा है। जब प्रार्थना केवल... सामान्य बात हो, न कि कोई संस्कारिक कार्यक्रम हो। जब आप आभारी होने का अभ्यास करते हैं, और आप ऐसा तब भी करते हैं, जब दिन बिलकुल भी अच्छा न बीता हो। जब आप अपनी निराशा को “धार्मिक” बातों से छिपाने के बजाय ईमानदारी से बता पाते हैं।

बच्चे इन बातों पर ध्यान देते हैं, और वे सच में ऐसा करते हैं। वे देखते हैं कि जब योजनाएँ बिगड़ जाती हैं, तो असल में कौन सी बात आपको स्थिर रखती है। वे सुनते हैं कि आप पैसे, काम, आपको दुःख पहुँचाने वाले लोगों और यहाँ तक कि भविष्य के बारे में कैसे बात करते हैं। वे ध्यान देते हैं कि क्या परमेश्वर के बारे में एक जीवित, श्वास लेने वाली वास्तविकता के रूप में बात की जाती है, या बस एक ऐसे विषय के रूप में बात की जाती है, जिसे आपको बहुत सावधानी से और धार्मिक नियमों के साथ सम्भालना पड़ता है।

मैं जानता हूँ कि बहुत से माता-पिता को चिन्ता होती है कि वे “बहुत कुछ” नहीं कर रहे हैं। परन्तु पवित्रशास्त्र इस पूरे प्रश्न को ही बदल देता है। वह पूछता है कि: क्या आप ऐसे विश्वास के साथ जी रहे हैं, जिसे असल में अपनाया जा सके? क्योंकि, सच कहूँ तो, विश्वास सिखाने से अधिक अपनाया जाता है। बच्चे यह बताने से बहुत पहले ही सीख रहे होते हैं कि वे किस बात पर विश्वास करते हैं। वे बस आपके जीवन बिताने के तरीके को देखकर ही इस “व्यावहारिक ईश-विज्ञान” को बना रहे होते हैं। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक यह मानती है कि आप बस वहाँ मौजूद हैं, यह नहीं कि आप सिद्ध हैं। यह मानती है कि परमेश्वर आपके लिए इतना महत्व रखता है कि वह आपके जीवन की हर गतिविधि में दिखाई देता है। क्या इस प्रकार का विश्वास चाहिए? यह दुबाव से नहीं मिलता; यह बस निकट रहने से, साथ रहने से मिलता है।

कहानी की ताकत

सच कहूँ तो, यदि मुझे मसीही घरों की सबसे विनाशकारी आदतों में से किसी एक का नाम लेना हो, तो वह चुप्पी होगी। और इसमें भी विशेष रूप से, विफलता के बारे में वह भारी चुप्पी होगी। माता-पिता को अक्सर यह विचार आता है—और

अपने प्रतिदिन के कामों से एक विरासत छोड़ना

यह अच्छी मंशा वाला विचार है—कि वे अपने बच्चों की हर कमजोरी को छिपाकर उनकी रक्षा कर रहे हैं। परन्तु क्या आप जानते हैं कि इसके बजाय असल में क्या छिप जाता है? वह शुद्ध और साधारण अनुग्रह है।

बच्चों को ऐसे “सिद्ध” माता-पिता की आवश्यकता नहीं होती, जो कभी संघर्ष करते हुए न दिखें। सच में उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं होती। उन्हें असल में ऐसे माता-पिता की आवश्यकता होती है, जो यह जानते हों कि जब वे अनिवार्य रूप से विफल हो जाएँ, तो वापस परमेश्वर के पास कैसे जाना है। इसलिए, अपने बच्चों को अपनी कहानी सुनाएँ। परन्तु इसमें जल्दबाजी न करें। इसे धीरे-धीरे, समय के साथ-साथ, उन छोटे-छोटे हिस्सों में करें, जिन्हें वे सच में अपना सकें। उन्हें अपनी गलतियों और डर के बारे में बताएँ। ऐसे दौर के बारे में बताएँ, जब आपको सच में पता नहीं था कि आप क्या कर रहे हैं। और कृपा करके, उन्हें यह बताएँ कि परमेश्वर आपसे वहाँ कैसे मिला—और यह हमेशा किसी बड़े और नाटकीय तरीके से नहीं, बल्कि बस... विश्वासयोग्य तरीके से बताएँ।

आपको लग सकता है कि इससे आपका अधिकार कम हो जाएगा, परन्तु असल में इसका उल्टा होता है। इससे एक ऐसा भरोसा बनता है, जो हमेशा बना रहता है। यह आपके बच्चों को सिखाता है कि पछतावा जीवन का एक सामान्य हिस्सा है और दया एक ऐसी सच्ची बात है, जिसे छुआ जा सकता है। यह उन्हें दिखाता है कि विश्वास का अर्थ “प्रभावशाली” दिखना नहीं है—बल्कि इसका अर्थ ईमानदार होना है।

मैं ऐसे बड़े हो चुके बच्चों के साथ बैठ चुका हूँ—जिन्होंने पूरी तरह से अपना विश्वास त्याग दिया था। और ऐसा क्यों हुआ? अक्सर, ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि उन्हें लगता था कि मसीही विश्वास केवल उन लोगों के लिए है, जिन्होंने कभी उस तरीके से संघर्ष नहीं किया, जैसे उन्होंने किया। उनके माता-पिता की मंशा अच्छी थी—और इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनकी मंशा अच्छी थी—परन्तु उन्होंने कभी अपने बच्चों को दया करने वाली “भाषा” नहीं सिखाई। इसलिए सुसमाचार किसी पुस्तक की तरह बस एक सैद्धान्तिक बात बनकर रह गया।

परन्तु मैंने ऐसे परिवार भी देखे हैं, जहाँ माता-पिता ने अपनी विफलताओं और परमेश्वर के लम्बे धीरज के बारे में खुलकर बातें कीं। वे बच्चे किसी चोट के निशान के बिना बड़े नहीं हुए (और हममें से कोई भी ऐसे बड़ा नहीं होता), परन्तु उन्हें ठीक-ठीक पता था कि ठोकर खाने पर कहाँ जाना है। वे जानते थे कि अनुग्रह केवल “बुरे” लोगों के लिए कोई आपातकालीन उपाय नहीं है। यह प्रतिदिन के जीवन का हिस्सा था।

कहानियाँ इस बात को आकार देती हैं कि बच्चा परमेश्वर के बारे में कैसे कल्पना करता है। यदि वे हमेशा केवल आपकी मजबूत बातों के बारे में सुनते हैं, तो वे ऐसा मान सकते हैं कि जैसे ही कोई कमजोरी सामने आती है, विश्वास समाप्त हो जाता है। परन्तु यदि वे आपकी कमजोरी और परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के बारे में सुनते हैं, तो वे सीखते हैं कि असल में आशा कहाँ मिलती है। यदि आप अपनी कहानी ईमानदारी से बताते हैं, तो वह केवल शब्दों से कहीं बढ़कर बन जाती है; वह उनके लिए नक्शा बन जाती है।

लिखना

कभी-कभी, केवल बातचीत पर्याप्त नहीं होती। मैंने यह अनुभव किया है, और शायद आपने भी किया होगा। यह ईमानदार न होने का मामला नहीं है। हम सभी के पास समय सीमित होता है। लिखना आपके जाने के बाद भी आपको अपने विचार साझा करते रहने का एक तरीका प्रदान करता है।

मसीही वसीयतनामा किसी को नियंत्रण में करने के लिए नहीं होता, भले ही कुछ लोग इसका उपयोग उस तरीके से करें। यह केवल अपेक्षाओं या चेतावनियों की सूची नहीं है। मेरे लिए तो यह एक गवाही है। यह आपके लिए इस बात को कहने का मौका है: “देखो, परमेश्वर के बारे में मैंने असल में यह सीखा। यहाँ पर मुझे बहुत संघर्ष करना पड़ा, और इस तरह असल में अनुग्रह ने मुझे उस संघर्ष से पार लगाया।”

लिखने से आपको रुककर यह सोचने में सहायता मिलती है कि असल में कौन सी बात महत्व रखती है। कई लोग आरम्भ करने के बाद यह देख पाते हैं कि उन्होंने विश्वास का निर्माण करने से अधिक समय लोगों को दिलासा देने में बिताया। इसे समझना कठिन हो सकता है, परन्तु इससे स्पष्टता भी मिलती है।

वसीयतनामा लम्बा नहीं होना चाहिए। जो बात महत्व रखती है, वह यह है कि उसमें ईमानदारी हो—उसमें असली ईमानदारी हो। जब आप लिखें, तो अपने भविष्य या उपलब्धियों के बजाय मसीह पर अधिक ध्यान दें। याद रखे जाने की इच्छा के बजाय, असल जीवन में अनुभव की गई दया के बारे में अधिक बताएँ। और जब भरोसे की बात आए, तो इसे सफलता से बढ़कर महत्व दें।

अपने बच्चों को बताएँ कि जब जीवन में कुछ ठीक न लगे, तो वे किस पर आशा लगानी है। उन्हें स्पष्ट बताएँ कि उनके भविष्य पर आपका भरोसा इस बात पर नहीं है कि आप उनके लिए बैंक खाते में कितने पैसे छोड़ रहे हैं। यह उस परमेश्वर पर भरोसे की बात है, जो उनके साथ तब भी रहेगा, जब आप उनके साथ नहीं होंगे।

मैंने ऐसे परिवार देखे हैं, जो सम्पत्ति समाप्त हो जाने और पैसा खर्च हो जाने के बाद भी इन वसीयतनामों को सम्भालकर रखते हैं। ऐसा इसलिए नहीं होता कि वे लेखन बहुत प्रभावी या साहित्यिक होते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि उन शब्दों में उन्हें अपने माता-पिता की आवाज सुनाई देती है—जो जाने-पहचाने, सच्चे और भरोसेमन्द शब्द होते हैं। सब कुछ लिखकर रखना विनम्रता का काम है। और इसका अर्थ यह मानना है कि आप हमेशा वहाँ नहीं रहेंगे, और सब कुछ अपने नियंत्रण में रखने का प्रयास करने के बजाय अपने परिवार को परमेश्वर के भरोसे छोड़ने का यह एक तरीका है।

सही शब्दावली को आगे बढ़ाना

और दिन के अन्त में, विरासत का अर्थ असल में केवल सम्पत्ति या पैसा नहीं होता, है न? ऐसा मुख्य रूप से तो नहीं होता। वास्तव में यह भाषा की बात है। यह उन विशेष शब्दों की बात है, जो बस... आपके घर की हवा में घुले-मिले रहते हैं। क्या वे डर के शब्द हैं—या वे भरोसे के शब्द हैं? क्या वे आभारीपन के शब्द हैं, या शायद “यह तो मेरा हक है” वाली सोच के शब्द हैं? हो सकता है कि यह नियंत्रण करने बनाम पूरी तरह से निर्भर रहने की संस्कृति हो।

अपने प्रतिदिन के कामों से एक विरासत छोड़ना

और बात यह है कि: बच्चे परमेश्वर के बारे में ठीक वैसे ही बात करेंगे, जैसा वे आपको तब करते हुए सुनते हैं, जब जीवन में सब कुछ असल में गड़बड़ चल रहा हो। मैं मजेदार छुट्टियों की या जब आप कलीसिया की बेंच पर बैठे हों, उस समय की बात नहीं कर रहा हूँ। मेरा अर्थ गहरी निराशा के समय से, तनाव के समय से, और उन बिलकुल आम, उबाऊ और झुंझलाहट भरे दिनों से है।

निश्चय ही, हो सकता है कि आप उनके लिए एक घर छोड़ जाएँ। और हो सकता है कि आप उनके लिए कुछ संसाधन छोड़ जाएँ। और ये वस्तुएँ सच में सहायता करती हैं—परन्तु जब उनके पैरों तले संसार डगमगाने लगेगा, तब असल में उन्हें रास्ता दिखाने वाली बात ये नहीं होगी। रास्ता तो सुसमाचार ही दिखाएगा। और सुसमाचार क्या है? यह एक ऐसी बात है, जो आपस में बातचीत करने से सीखी जाती है। इसे उन शब्दों को बार-बार दोहराने और उन आदतों को अपनाने से सीखा जाता है, जिन्हें आप उनके सामने असल में जीते हैं। इसका अर्थ विशेष रूप से मुश्किल परिस्थिति में—धार्मिक शब्दजाल के बिना—स्पष्ट रूप से पवित्रशास्त्र की बातें करना और सबके सामने अनुग्रह दिखाना है।

इस तरह की विरासत कैसे बनेगी? यह अचानक नहीं बनती। परन्तु—सबसे अच्छी बात यह है कि—इसके लिए आपका एकदम सही होना भी महत्वपूर्ण नहीं है। यह बस धीरे-धीरे, साधारण विश्वासयोग्यता के साथ, एक बार में एक ईमानदार बातचीत के द्वारा बढ़ती है।

4

राज्य के लिए व्यावहारिक समझ

मसीही सम्पदा की योजना बनाने की व्यावहारिक समझ

आइए हम सच्चे बनें। अधिकांश लोग असल में योजना बनाने के बारे में बात करना पसन्द नहीं करते। और सच कहूँ तो? ऐसा इसलिए नहीं है कि उन्हें यह “समझ” नहीं आता। बल्कि ऐसा इसलिए है, क्योंकि योजना बनाना आपको ऐसी बातों के साथ बैठने के लिए विवश करता है, जिनके बारे में आप असल में कुछ पलों से अधिक सोचते भी नहीं। और अन्त में, उन प्रश्नों के उत्तर देने वाले आप नहीं होंगे। बिखरी हुई बातों को ठीक करने या उन्हें सुचारू रूप से चलाने वाले आप नहीं होंगे। कोई और वहाँ खड़ा होगा—जो आपके पीछे छोड़ी गई हर बात को सम्भालेगा—और वह बस उन्हें समझने का प्रयास कर रहा होगा।

यह कैसी सोच है? इसी सोच के कारण से लोग बातों को टालते रहते हैं। हम कहते हैं, “मैं इसे बाद में कर लूँगा,” या “अभी तो बहुत समय है।” परन्तु बात यह है कि: हम किसी बातचीत से बच रहे हैं, केवल इसलिए समय नहीं रुकता है। और उस बोझ का क्या? वह बस हवा में गायब नहीं हो जाता। वह बस बदल जाता है। आमतौर पर, वह उन लोगों पर आ पड़ता है, जिन्हें आप सबसे अधिक प्रेम करते हैं, और अक्सर ऐसा तब होता है, जब वे पहले से ही दुःख के बोझ तले दबे होते हैं।

योजना बनाने का अर्थ बीमार हो जाना नहीं है। ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। इसका अर्थ तो ईमानदार होना है। इसका अर्थ तो अपने लोगों से इतना प्रेम करना है कि जब आपके पास ऐसा करने की स्पष्टता और सामर्थ्य हो तो आप असल में आगे की सोचें। चाहे आप सावधानी से योजना बनाएँ या पूरी की पूरी बात को टाल दें, फिर भी कुछ न कुछ तो पीछे छूट ही जाता है। वह शान्ति... या उलझन, एक स्पष्ट दिशा... या बहुत सारा तनाव हो सकता है। इन परिणामों में इसी समय पर आकार मिल रहा है—और अन्त आने से बहुत पहले ही ऐसा हो रहा है।

उदारता ही आराधना है

आराधना क्या है? यह बात मजाक लगेगी, परन्तु हम आमतौर पर इसे बक्सों में बन्द कर देते हैं। हमें लगता है कि इसका अर्थ केवल संगीत या रविवार की सुबह कलीसिया जाना है। परन्तु जब आप असल में पवित्रशास्त्र की गहराई में जाते हैं, तो यह इतनी छोटी नहीं होती। यह तो उसके आसपास भी नहीं होती। सच्ची आराधना वह है, जो आपकी दृष्टि में महत्व रखती है। इसी के लिए आप परमेश्वर पर भरोसा करने को इच्छुक होते हैं, जब बातों को पकड़े रखना ही एकमात्र “सुरक्षित” कदम लगता है। और—सच कहें तो—पैसों के अतिरिक्त और कुछ भी इस सच्चाई को उतनी तेजी से उजागर नहीं करता है। कुछ भी नहीं।

अपने प्रतिदिन के कामों से एक विरासत छोड़ना

एक पल के लिए कलीसिया के बारे में सोचिए। हममें से अधिकांश लोगों के लिए, वह स्थानीय समुदाय वर्षों से चुपचाप हमारा साथ देता रहा है। मेरा अर्थ है कि ऐसे सोचिए कि आपको किसने शिक्षा दी। जब आप भटक गए थे, तो किसने आपको सही रास्ता दिखाया? जब आपके पास स्वयं के लिए प्रार्थना में कहने के लिए शब्द नहीं थे, तब कोई आपके लिए प्रार्थना कर रहा था। जब सब कुछ बिखर गया था, तब वे लोग आपके साथ मुश्किल घड़ी में बैठे रहे। आपने तब सुसमाचार का प्रचार होते सुना, जब आपका विश्वास... कमजोर लग रहा था।

और यह सब कुछ तभी हो चुका था, जब आपने “अन्तिम योजनाएँ” बनाने के बारे में सोचा भी नहीं था। परन्तु फिर, जिस पल हम अन्त के बारे में सोचना आरम्भ करते हैं, तो क्या होता है? कलीसिया हमारी सोच से गायब हो जाती है। ऐसा आमतौर पर इसलिए नहीं होता कि लोग गुस्सा हैं। यह स्पष्ट और सामान्य डर है। हमें डर लगता है कि बातें ठीक से नहीं होंगी। हमें डर लगता है कि कहीं नियंत्रण हमारे हाथ से न निकल जाए। हमें चिन्ता होती है कि बातें अब “हमारे तरीके” से नहीं होंगी।

परन्तु उस डर का क्या? यह तो आराधना के उद्देश्य को ही पूरी तरह से अनदेखा करता है। कलीसिया को दान देना कभी भी उसके परिणाम के बारे में 100% पक्का पता होने के बारे में नहीं था। यह भरोसे की बात है और यह हमेशा से ऐसा ही रहा है। आप इसलिए दान नहीं देते कि आप उसके परिणाम पर नियंत्रण कर सकते हैं—आप इसलिए दान देते हैं, क्योंकि परमेश्वर इसके योग्य है। और बात यहीं समाप्त हो जाती है। आपका जीवन समाप्त होने से उसका काम नहीं रुकता।

जब आप उदारता के साथ आराधना के एक काम की तरह बर्ताव करते हैं, तो यह कोई “सोचा-समझा” कदम नहीं रह जाता। यह प्रभाव डालने और अपना नाम किसी बात पर लिखवाने के बारे में नहीं है। यह बस... आभारीपन बन जाता है। इसका अर्थ बिना किसी को सफाई दिए आपकी ओर से यह कहना है: “परमेश्वर यहाँ विश्वासयोग्य रहा, और मुझे भरोसा है कि मेरे जाने के बाद भी वह विश्वासयोग्य रहेगा।” इस तरह का दान हृदय पर प्रभाव डालता है। इसमें नियंत्रण करना उतना महत्वपूर्ण नहीं लगता। इसमें डर अपनी पकड़ असल में खो देता है। और जो बैंक खाते के ब्यौरे में नुकसान जैसा दिखता है, वह आत्मा के लिए एक बड़ी जीत जैसा लगता है।

शान्तिपूर्ण सम्पदा

दुःख तो अपने आप में ही बहुत भारी होता है। और जब उसमें उलझन भी जुड़ जाती है, तो वह और भी भारी हो जाता है। मैंने परिवारों को टूटते देखा है, और ऐसा लालच के कारण नहीं हुआ। ऐसा चुप्पी के कारण हुआ—जिसमें कोई असली बातचीत नहीं थी, कोई सफाई नहीं थी, बस कानूनी दस्तावेज और अनुमान थे।

इसी समय पर लोग अन्दाजा लगाने लगते हैं कि असल में आपका अर्थ क्या था। जिन पुराने घावों के बारे में आपको लगता था कि वे भर चुके हैं, वे फिर से ताजा हो सकते हैं। इसी के पीछे-पीछे भरोसा भी धीरे-धीरे समाप्त होने लगता है। इस तरह का नुकसान किसी भी विरासत से कहीं अधिक समय तक बना रहता है। शान्तिपूर्ण रीति से धन-सम्पत्ति के मिलने का अर्थ हमेशा सब कुछ बराबर-बराबर होना नहीं होता। इसका अर्थ यह सुनिश्चित करना होता है कि किसी को भी हैरानी न हो। स्पष्ट बात करना भी एक तरह से दया दिखाना है।

इसका अर्थ है कि आपको तब बात करनी चाहिए, जब आप कर सकते हैं। समझाएँ कि आपने कुछ निर्णय क्यों लिए और उनके पीछे के कारण बताएँ। आप यह स्वयं का बचाव करने के लिए नहीं कर रहे हैं। यह आपके बच्चों की सहायता करने के बारे में है, ताकि आपके जाने के बाद उन्हें आपकी मंशाओं का अन्दाजा न लगाना पड़े।

मैंने परिवारों को गहरे दुःख से गुजरते हुए भी एक-दूसरे के समीप रहते देखा है, क्योंकि सब कुछ स्पष्ट था। वे हर निर्णय से सहमत नहीं थे या हर परिणाम को पसन्द नहीं करते थे, परन्तु वे उनके कारणों को समझते थे। उस समझ ने कड़वाहट को बढ़ने नहीं दिया।

मेल करानेवाला होना आपका जीवन समाप्त होने के साथ ही नहीं रुक जाता। कई तरीकों में, यह बदलाव लाने का एक अन्तिम अवसर होता है। मेल कराने को ध्यान में रखकर योजना बनाने का अर्थ केवल आँकड़ों के बारे में सोचना नहीं, बल्कि असली लोगों के बारे में सोचना है। लोगों के व्यक्तित्वों, पारिवारिक इतिहास और हर किसी की कमजोरियों पर ध्यान दें। उनकी दिखावट की नहीं, बल्कि इस बात की अधिक चिन्ता करें कि आपके जाने के बाद आपके बच्चे आपस में कैसे रहेंगे। और इस समय पर इन बातों से बचना आसान लग सकता है, परन्तु लम्बे समय में समझदारी अधिक दयालु होती है।

राज्य का प्रभाव

धन-सम्पत्ति की योजना बनाने को अधिकांश लोग केवल कागजी कार्यवाही समझते हैं। यह एक जाँच-सूची जैसा लगता है: यहाँ हस्ताक्षर करो, वहाँ हस्ताक्षर करो, फिर लिफाफे को बन्द करके आगे बढ़ जाओ।

हमारी संस्कृति में इसे आमतौर पर इसी तरह देखा जाता है।

परन्तु पवित्रशास्त्र इस दृष्टिकोण को चुनौती देता है। वह आपको धन-सम्पत्ति की योजना बनाने को केवल कानूनी साफ-सफाई के रूप में नहीं, बल्कि भण्डारीपन के अन्तिम काम के रूप में देखने के लिए कहता है। जब आप यहाँ नहीं रहेंगे, तब भी आपके निर्णय बोलते रहेंगे। वे दिखाएँगे कि आपने किस पर भरोसा किया और आपने क्या विश्वास किया जो आपके जाने के बाद भी बना रहेगा।

और नियंत्रण हमेशा हाथ से निकल जाता है। ऐसा हमेशा ही होता है।

मसीही धन-सम्पत्ति की योजना बनाना संसार के तरीके से अधिक जोरदार नहीं होता। यह एकदम शान्त रीति से होता है। संसार पूछता है, “किसको क्या मिलेगा?” परन्तु पवित्रशास्त्र पूछता है, “यह पीछे कौन सी कहानी छोड़ जाता है?” क्या हम परमेश्वर की कहानी में जीवन बिता रहे हैं या अपनी ही बनाई हुई कहानी में जीवन बिता रहे हैं? यह संसार सुरक्षा पर ध्यान देता है, जबकि पवित्रशास्त्र सेवा को बढ़ावा देता है। यह केवल उस बात को बचाने के बारे में नहीं है, जिसे आपने बनाया है, बल्कि उस व्यक्ति का सम्मान करने के बारे में है जिसने सबसे पहले आपको वह वस्तु दी थी। यही उसकी कहानी में जीवन बिताना है।

भले ही यह बदलाव छोटा लगे, परन्तु यह सब कुछ बदल देता है।

अपने प्रतिदिन के कामों से एक विरासत छोड़ना

अब, मुझे गलत न समझें। कानूनी स्पष्टता महत्वपूर्ण होती है। व्यवस्था महत्व रखती है। वसीयत बनाने में, उसे सौपने में और लाभार्थी निर्धारित करने में सटीकता की आवश्यकता होती है। यदि कागजी कार्यवाही ठीक से न हो, तो परिवारों में गड़बड़ियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। मैंने भाई-बहनों को अस्पष्ट निर्देशों के कारण से झगड़ते देखा है। यह तब की खामोशी के कारण है, जब स्पष्टता की आवश्यकता थी, और वहाँ की उलझन के कारण है, जहाँ शान्ति प्रबल होनी चाहिए थी। विश्वासयोग्यता अपना काम करती है।

मैंने विश्वासियों को अपनी धन-सम्पत्ति का प्रबन्ध इस तरह करते देखा है कि उनके जाने के बाद भी सुसमाचार के काम को सहायता मिलती रहे। एक छोटी सी कलीसिया इसलिए चलती रही, क्योंकि किसी ने चुपचाप इसकी सहायता की थी। एक मिशनरी परिवार को कठिन समय में सहायता मिली। एक स्थानीय सेवकाई बिना किसी सार्वजनिक पहचान के चलती रही। वहाँ कोई तस्खियाँ या सुखियाँ नहीं थी—वहाँ बस खामोश आज्ञाकारिता थी।

वे निर्णय कोई विरासत बनाने या नाम कमाने के बारे में नहीं थे। वे भरोसे के बारे में थे। उन्होंने खामोशी से कहा, “मैं यहाँ नहीं रहूँगा, परन्तु परमेश्वर रहेगा।”

जिस तरह हम डर का सामना करते हैं, यह साधारण सच उसे बदल देता है।

जब आप सच में विश्वास करते हैं कि आपके जाने के बाद भी परमेश्वर काम कर रहा है, तो आप नियंत्रण छोड़ने लगते हैं। पैसा अब आपकी सुरक्षा की अन्तिम आशा नहीं लगता। यह एक ऐसा साधन बन जाता है, जो कहीं बन्द पड़ा रहने के बजाय चलता रहता है, धूमता रहता है और सेवा करता रहता है।

जब आप इस तरह योजना बनाते हैं, तो जल्दबाजी कम हो जाती है और घबराहट दूर हो जाती है। आप अपने जाने के बाद सब कुछ नियंत्रण करने का प्रयास करना छोड़ देते हैं। इसके बजाय, आप इस बात पर ध्यान देते हैं कि क्या आपकी योजनाएँ उस राज्य को प्रतिबिम्बित करती हैं, जिसमें आपने विश्वास करने की बात कही थी।

इस तरह योजना बनाना ठण्डा या बीमार कर देने वाला नहीं है। यह समाप्त होने पर कोई दुःखी करने वाला ध्यान नहीं है। यह आशा जगाने वाला है। यह बिना डरे नश्वरता की सच्चाई का सामना करता है। यह मानता है कि आपका समय सीमित है, परन्तु इस बात से डर उत्पन्न होने से इन्कार करता है।

इसके बजाय, यह स्पष्टता प्रदान करता है।

स्पष्ट सोच आपके परिवार के लिए एक उपहार है।

यह विकल्प अच्छा नहीं है। मैंने संदिग्धता, अन्दाजा लगाने और ऐसी अपेक्षाओं को देखा है, जिन्हें बताया नहीं गया, और जो किसी के मरने के बाद सामने आती हैं, जब कोई यह नहीं बता सकता कि असल में इनका क्या अर्थ था। इस तरह की उलझन किसी का सम्मान नहीं करती।

परन्तु जब धन-सम्पत्ति से जुड़े निर्णय खामोशी से चिन्ता करने के बजाय मजबूत भरोसे से लिए जाते हैं, तो वे पीछे कुछ बेहतर छोड़ जाते हैं। इसका अर्थ केवल सम्पत्ति हस्तान्तरित करना या सही कागजी कार्यवाही करना नहीं है।

वे एक तरह की अनुकूलता का एहसास छोड़ जाते हैं।

वे आपके बच्चों को—और ध्यान देने वाले किसी भी व्यक्ति को—बताते हैं कि परमेश्वर का राज्य केवल रविवार की शब्दावली वाला शब्द नहीं था। इसने कागजों को आकार दिया। इसने हस्ताक्षरों को आकार दिया। इसने संसाधनों के अन्तिम बंटवारे को आकार दिया।

यह कोई छोटी बात नहीं है।

और एक बार जब आप धन-सम्पत्ति की योजना बनाने को इस तरीके से देखते हैं—जैसे कि भण्डारीपन अन्तिम अध्याय तक चला गया हो—तो यह प्रशासनिक मलबे की तरह लगना बन्द हो जाता है। यह एक ऐसा अखाड़ा बन जाता है, जहाँ परमेश्वर पर भरोसा रखना आज्ञाकारिता की धार को और भी तेज करता है।

बिलकुल अन्त तक ऐसा होता है।

जब आप उस कमरे में नहीं होंगे

और यह तो पक्का है कि—एक दिन ऐसा आएगा—जब आप अपनी बात समझाने के लिए वहाँ नहीं होंगे। आप बातों को स्पष्ट करने के लिए वहाँ नहीं होंगे। और आपके निर्णयों का क्या होगा? उन्हें ही आपकी ओर से सब कुछ बताना होगा। वे आपके बच्चों को (और शायद कई अन्य लोगों को भी) बताएँगे कि आप वास्तव में परमेश्वर के बारे में क्या विश्वास करते थे। यह भरोसे की बात है। यह इस बारे में है कि उन समयों में आपके लिए असल में क्या महत्व रखता था, जब जीवन पूरी तरह से अनिश्चित लगता था, और आपको एहसास होता था कि भविष्य पर नियंत्रण नहीं किया जा सकता।

राज्य के लिए इस तरह की व्यावहारिक बुद्धि से क्या होगा? यह “प्रभावशाली” या दिखावटी बनने का प्रयास नहीं करती। और सच कहूँ तो, यह खामोशी से सोच-समझकर की गई बात है। यह बहुत ही साधारण है। यह अपना नाम बनाए रखने या कोई स्मारक बनाने में कोई ऊर्जा खर्च नहीं करती। यह बस शान्ति और शालोम छोड़ जाने का प्रयास करती है, जो हर दिन, बिना किसी दिखावे के, परमेश्वर की उपस्थिति में जीवन बिताने से जुड़ी सच्ची खुशहाली है। और इस तरह की शान्ति को—जब असल में, जान-बूझकर पीछे छोड़ा जाता है—तो यह पैसों से खरीदी जा सकने वाली किसी भी बात से कहीं अधिक समय तक बनी रहती है।

5

अच्छे से समाप्त करना

अच्छे से समाप्त करना: अपनी अनन्त और सांसारिक विरासत की तैयारी करना

सच कहूँ तो? हममें से अधिकांश लोग असल में अन्त के बारे में नहीं सोचते। कम से कम, किसी सच्चे टिकाऊ तरीके से तो नहीं सोचते। कई पीढ़ियों पहले यह आम बात थी। परन्तु अब यह बात हमें बीमार करने वाली लगती है। हम “काम के” या “महत्वपूर्ण” बने रहने में बहुत व्यस्त रहते हैं। अन्त हमेशा मीलों दूर की बात लगती है, भले ही आप जानते हों कि असल में ऐसा नहीं है। और जब यह आखिरकार क्षितिज से सामने आने लगता है, तो अक्सर यह बहुत खामोश होता है। पवित्रशास्त्र अन्त के बारे में बात तो करता है, परन्तु वह ऐसा हमें जल्दबाजी में डालने या डराने के लिए नहीं करता। वह हमें अपने दिन गिनना सिखाता है, ताकि हमारे पास बुद्धिमानी से भरा हृदय हो। वह अन्त के बारे में बात इसलिए करता है, ताकि हम बातों को इतना कसकर न पकड़ें कि यह भूल जाएँ कि असल में इस पूरे समय में कौन हमारा बोझ उठा रहा है। अच्छे से समाप्त करने का अर्थ अन्त में कोई बड़ा और प्रभावशाली प्रदर्शन करना नहीं है। यह बस बिना घबराए अपनी पकड़ ढीली करना सीखने के बारे में है। और मेरा भरोसा करें कि जैसा यह सुनाई पड़ता है, यह उससे कहीं अधिक कठिन है।

जीवन का सब्क का दिन

हम अपना पूरा जीवन काम करने, योजनाएँ बनाने और “जिम्मेदार” बने रहने का प्रयास में बिता देते हैं। हम यह सब कुछ पकड़कर रखते हैं—या किसी न किसी तरीके से ऐसा करने का प्रयास तो करते ही हैं। यह ठीक है, और यह गलत नहीं है। इस संसार में किसी भी बात के बिगड़ने से पहले ही परमेश्वर ने हमें काम दिया था। परन्तु एक समय ऐसा आता है, जब काम को बदलना पड़ता है। या शायद सबक को बदलना पड़ता है? किसी न किसी मोड़ पर, आपको यह सीखना होगा कि स्वयं को पूरी तरह विफल महसूस किए बिना कैसे रुकें।

मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसे लोगों के साथ बैठा हूँ, जो असल में मरने से नहीं डरते थे, परन्तु वे “अधूरे” कामों से बहुत बेचैन थे। वे ऐसी चर्चाएँ थीं, जिनसे वे बचते रहे। और वे ऐसी बातें थीं, जिन्हें वे ठीक करना चाहते थे, पर नहीं कर पाए। उन्हें मृत्यु से परेशानी नहीं थी—उन्हें इस भावना से परेशानी थी कि यदि उन्होंने इसे छोड़ दिया, तो सब कुछ बिखर जाएगा। इस डर का क्या करें? वह बस आपको यह दिखाता है कि वे अपने कंधों पर कितना बोझ उठाने का प्रयास कर रहे थे।

“जीवन का सब्क का दिन” यह समझना है कि जब आपको पीछे हटना पड़ता है, तो परमेश्वर दूर नहीं हट जाता। आप कम काम कर रहे हैं, केवल इसलिए उसका नियंत्रण समाप्त नहीं हो जाता। और सच कहूँ तो, इस संसार को सम्भालने के लिए उसे आपकी आवश्यकता नहीं है। वह जो आरम्भ करता है, उसे पूरा भी करता है। और बात यहीं पर समाप्त हो जाती है।

छोड़ देने का अर्थ हार मान लेना नहीं होता—यह भरोसा करना होता है। कभी-कभी, यह सबसे गहरा भरोसा ही होता है, जो किसी मनुष्य को सीखना पड़ता है। उस तरह का विश्राम आपको अचानक नहीं मिलता। आमतौर पर, यह धीरे-धीरे आता है। और कभी-कभी यह ऐसी कमजोरियों या सीमाओं के द्वारा आता है, जिन्हें आपने भी नहीं चुना होता। यह एक आसान (परन्तु पीड़ादायी) एहसास है कि: आपने वह सब किया, जो आप कर सकते थे, और अब आपसे कहा जा रहा है कि जो काम आप नहीं कर सकते, उसके लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें। और अन्त में जब वह विश्राम मिलता है? तो वह शान्त तो होता है, परन्तु वह असली होता है।

पुनरुत्थान की आशा

मसीही लोग अन्त को उसी तरीके से नहीं देखते, जैसे बाकी लोग देखते हैं। ऐसा इस कारण से नहीं है कि हम दुःख नहीं मनाते (हम निश्चित रूप से दुःख मनाते हैं) या इस कारण कि मृत्यु हमें कोई छोटी-मोटी बात लगती है। ऐसा नहीं है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि मृत्यु ही अन्तिम बात नहीं है। एक विश्वासी के लिए, अन्त का अर्थ “अलविदा” नहीं है। यह कुछ ऐसा है, जैसे “थोड़ी देर में मिलते हैं।” इसलिए उस समझ से, मृत्यु का डंक समाप्त हो गया है।

मैं ऐसे कमरों में रहा हूँ, जहाँ यह सच केवल मंच से बताया नहीं गया—बल्कि यह वहाँ मौजूद था। उस नुकसान का बोझ भारी था। वह दुःख बहुत असली था। और फिर भी? वहाँ एक स्थिरता थी। कोई बनावटी आशावाद या इन्कार नहीं, बल्कि एक ऐसी आशा जिसे बड़े लम्बे समय से जिया गया था। उस तरह की आशा अन्तिम पल में अचानक से निकलकर सामने नहीं आती। यह कई वर्षों के साधारण और प्रतिदिन के विश्वास से बनती है। यह मसीह पर उस समय भरोसा करने के बारे में है, जब कुछ भी विशेष या नाटकीय नहीं हो रहा होता। जब जीवन साधारण होता है।

आप अपने पीछे जो छोड़ते हैं, वह केवल आपके द्वारा जुटाया गया सामान नहीं होता। आप अपने पीछे उस बात का एहसास छोड़ते हैं, जो भविष्य के बारे में आप असल में विश्वास करते थे। जैसे कि—क्या यह संसार ही सब कुछ था? या कुछ बेहतर आने वाला था? पुनरुत्थान की आशा आपको उस बेचैन चाहत से स्वतंत्र करती है कि आप अपने काम या नाम के द्वारा हमेशा के लिए बने रहें। यदि आप सच में विश्वास करते हैं कि कोई दूसरा नगर आने वाला है, तो आपको ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है।

यीशु पर आँखें लगाए रहना

पवित्रशास्त्र मसीही जीवन के बारे में एक दौड़ की तरह बात करता है, परन्तु सच कहूँ तो, यह कोई छोटी दूरी तेज दौड़ नहीं है। यह एक ऐसी दौड़ है, जिसे आप बस सीधे खड़े रहकर पूरा करते हैं। इसे अच्छी तरह से पूरा करने का अर्थ यह नहीं है कि आप अन्त में सबसे मजबूत ठहरें। यह इस बात को जानने के बारे में है कि जब आप पूरी तरह थक चुके हों, जब आपके पास साबित करने के लिए कुछ न बचे, उस समय कहाँ देखना है।

मैंने लोगों को बुरी तरह से समाप्त करते देखा है, और दूसरों को बहुत अच्छे से समाप्त करते भी देखा है। इसमें अन्तर क्या था? यह उनकी परिस्थिति की बात नहीं थी। यह आदत की बात थी। यह वह बात थी कि इतने वर्षों तक उनकी दृष्टि कहाँ लगी हुई थी। जो लोग बार-बार यीशु के पास लौटना सीख गए थे, उनके लिए उस पर भरोसा करना तब बहुत आसान हो गया, जब बाकी सब कुछ बिखरने लगा था। परन्तु जो लोग बस बिना सोचे-समझे आगे बढ़ते रहे, उनका क्या हुआ? जब

अपने प्रतिदिन के कामों से एक विरासत छोड़ना

बातें धीमी हुई तो उन्हें संघर्ष करना पड़ा। अच्छे से समाप्त करना असल में भरोसे का एक बड़ा लम्बा अभ्यास है। यह— अन्तिम श्वास तक—इस बात पर विश्वास करने के बारे में है कि मसीह की आप पर पकड़, उस पर आपकी कमजोर पकड़ से कहीं अधिक मजबूत है। और, परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यह ऐसा ही है।

आगे की ओर देखना

बाइबल उस नगर के बारे में बताती है, जो आने वाला है। और देखिए कि यह केवल एक रूपक नहीं है। यह सच्चाई है। वह एक ऐसी जगह है, जहाँ अन्त में सब बातें ठीक हो जाती हैं। वहाँ काम करने से निराशा नहीं होती। वहाँ डर आप पर हावी नहीं होता। वहाँ नुकसान हर समय आपका पीछा नहीं करता।

परन्तु मुख्य बात यह है कि: भविष्य का वह नगर आपको इस जीवन से “बाहर” निकालने के लिए नहीं है। उसका उद्देश्य यह है कि आपको इस जीवन को हल्के-फुल्के ढंग से जीने में सहायता करे। जब आप यह विश्वास करते हैं कि वह नगर सच में आने वाला है, तो आपको इस संसार से इतनी तत्परता से चिपके रहने की आवश्यकता नहीं पड़ती। आप इसे मूर्ति बनाए बिना भी काम कर सकते हैं। आप डर के मारे ठिठके बिना भी योजना बना सकते हैं। आप लोगों से प्रेम कर सकते हैं, यह नियंत्रित किए बिना कि वे कैसे बनेंगे। जीवन बिताने का वह तरीका कैसा होगा? यह हममें से किसी को भी स्वाभाविक रूप से नहीं आता। इसे धीरे-धीरे, वर्षों तक यीशु के पीछे छोटे-छोटे और साधारण तरीकों से चलकर सीखा जाता है। और आखिरकार जब अन्त आता है? तो ऐसा नहीं लगता कि सब कुछ ढह गया है। ऐसा लगता है कि जैसे मंजिल मिल गई हो। यही तो... यही तो अच्छे से समाप्त करने का अर्थ है।



निष्कर्षः

पहला कदम

आज ही लेना है

बहुत से लोग ऐसा सोचते हुए प्रतीत होते हैं कि विरासत तो कुछ ऐसी बात है, जिससे “बाद” में निपटा जाएगा। आप जानते हैं, जब आखिर में जीवन की गति धीमी हो जाए या जब आप बूढ़े हो जाएँ, और बातें शायद अधिक समझ में आने लगें। परन्तु सच क्या है? विरासत प्रतीक्षा नहीं करती। यह अभी बन रही है। असल में, यह कुछ समय से बन रही है। यह उन उबाऊ, प्रतिदिन के पलों में दिखती है। यह उस समय दिखती है कि जब आप थके हुए हों, तब आप कैसे बात करते हैं, जब परिस्थितियाँ पूरी तरह बिगड़ जाएँ, तब आप कैसी प्रतिक्रिया देते हैं, और जब आप किसी को प्रभावित करने का प्रयास न कर रहे हों, तब आपका परिवार आपको परमेश्वर के बारे में क्या कहते हुए सुनता है। ये पल छोटे लग सकते हैं, परन्तु असल में यही याद रह जाते हैं।

मुझे पता है कि बहुत से लोग ऐसी बातें पढ़ते हैं और तुरन्त ही एक अजीब सा दबाव महसूस करते हैं। जैसे अचानक आप “पीछे” रह गए हों, या आपको मंगलवार तक अपना पूरा जीवन ठीक करना हो। परन्तु सच तो यह है कि परमेश्वर ऐसे काम नहीं करता। वह आपसे यह अपेक्षा नहीं करता कि आप एक ही बार में अपना पूरा अस्तित्व सुधार लें। वह बस अगले कदम, बस एक कदम के बारे में पूछता है। असली प्रभाव छोड़ने के लिए आपको बहुत बड़े बैंक खाते की या 50 वर्ष की एकदम सही योजना की आवश्यकता नहीं है। आपको अपनी पिछली हर गलती को सुधारने की भी आवश्यकता नहीं है। असल में जो बात महत्व रखती है, वह बस आज यीशु के साथ-साथ चलना है। असली बदलाव वहीं से आरम्भ होता है।

और यदि आपको लगता है कि इस खेल में आपको बहुत देर हो चुकी है, तो आप ऐसे अकेले व्यक्ति नहीं हैं। सच में, अधिकांश लोग ऐसा ही महसूस करते हैं। यदि आपको किसी बात का पछतावा है, तो यह मनुष्य होने का ही एक हिस्सा है। वैसे भी, परमेश्वर पूरी कहानी जानता है। वह सच्ची बातों के साथ—उलझी हुई बातों के साथ—काम करता है, किसी “सिद्ध” संस्करण के साथ नहीं, जिसके लिए हम चाहते हैं कि ऐसा हुआ होता।

अपने प्रतिदिन के कामों से एक विरासत छोड़ना

विरासत प्रतिदिन की विश्वासयोग्यता से बनती है। यह सच छिपाने के बजाय सच बोलने के बारे में है। यह इस बात को मानने के बारे में है कि आप नियंत्रण नहीं कर रहे हैं (परन्तु हर तरीके से परमेश्वर पर भरोसा कर रहे हैं)। यह क्षमा माँगने और असल में दूसरों को क्षमा करने के बारे में है, तब भी जब यही वह अन्तिम काम हो, जिसे आप करना चाहते हों। यह लोगों को यह दिखाने के बारे में है कि आपका विश्वास आपके असली और किरकिरे जीवन का हिस्सा है, और यह कोई ऐसी “साफ-सुथरी” बात नहीं है, जिसे आप डिब्बे में बन्द करके रखते हैं।

मुझे डर लगता था कि यदि मैं विशेष रूप से अपने किशोर या बड़े बच्चों के सामने अपना पाप मान लूँगा, तो शायद वे मेरा आदर करना छोड़ देंगे। परन्तु मैंने पाया है कि अक्सर इसका उल्टा होता है। अधिक परिपक्व बच्चे पहले से ही जानते हैं कि उनके माता-पिता सिद्ध नहीं हैं। माता-पिता को भी यह बात माननी चाहिए, अपने बच्चों से प्रेम करना चाहिए और उन्हें धार्मिकता से भरा एक उदाहरण देना चाहिए। इस सुसमाचार का आनन्द मनाना शान्ति और रिश्तों में जुड़ाव लाता है कि मसीह में हमारे सारे पाप ढाँप दिए गए हैं।

लोग नहीं चाहते कि आप कोई महानायक बन जाएँ। वे बस यह जानना चाहते हैं कि जीवन में मुश्किलें आने पर कहाँ जाना है। वे बस यह देखना चाहते हैं कि आप सच में और व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा रखते हैं।

यदि आप थोड़े बड़े हैं, तो इसे किसी प्रकार की चेतावनी न समझें। इसे एक अनुमति समझें। आखिरकार यह थोड़ा धीमे हो जाने की, और वे बातें कहने की अनुमति है, जो सच में महत्व रखती हैं। जो आप ठीक कर सकते हैं, उसे ठीक करने की और—यह सबसे बड़ी बात है—उन बातों को छोड़ देने की अनुमति है, जिन्हें आपको हमेशा के लिए पकड़कर नहीं रखना था। और यदि आप जवान हैं? तो स्वयं को यह सोचकर धोखा न दें कि यह “बाद” के लिए है। आप अभी जिस तरह से जी रहे हैं, उससे कोई न कोई कुछ न कुछ सीख रहा है। आप जो आदतें बना रहे हैं, जिस तरह से आप डर का सामना करते हैं, जिस तरह से आप परमेश्वर के बारे में बात करते हैं... कोई न कोई वह देख रहा है। वे आपसे सीख रहे हैं, चाहे आप उन्हें सिखाने का प्रयास कर रहे हों या न कर रहे हों।

आप यह चुनाव नहीं कर सकते कि आपके पास कितना समय है, परन्तु आप यह चुनाव कर सकते हैं कि आप आज कैसे जीवन बिताएँगे। इसलिए, बस वहीं से आरम्भ करें। आज यीशु के साथ-साथ चलें। जिन बातों के कारण से आप रात में सो नहीं पाते, उनके लिए परमेश्वर पर भरोसा करें। जो लोग आपके सामने हैं, उनसे प्रेम करें। ईमानदार रहें। थक जाने पर आराम करें। बाहर से देखने पर ऐसा जीवन शायद बहुत विशेष न लगे, परन्तु असल में यही जीवन लम्बे समय तक चलता है।

मैं एक सरल प्रार्थना के साथ समाप्त करना चाहता हूँ। हे परमेश्वर, कृपया आज उन्हें तेरे साथ चलने में सहायता कर। उनके परिवारों का ध्यान रख। जहाँ वे अभी बहुत परेशान महसूस कर रहे हैं, वहाँ उन्हें सच्ची शान्ति दे। और जब उनका काम पूरा हो जाए, तो उन्हें तुझमें विश्राम मिले। आमीन।



डॉ. रिचर्ड जॉन परहार्ड, कीव थियोलॉजिकल सेमिनरी में सन् 2003 से बाइबल और थियोलॉजी के प्रोफेसर (आचार्य) रहते हुए, वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और एकेडमिक डीन (शैक्षणिक अध्यक्ष) के तौर पर काम करते हैं। उन्होंने बैपटिस्ट बाइबल सेमिनरी से सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. (मैग्रा कम लॉड) और डालस थियोलॉजिकल सेमिनरी से बाइबल की व्याख्या में मास्टर्स इन थियोलॉजी की डिग्री हासिल की है। वे “एंटीओसीन थियोरिया इन द राइटिंग्स ऑफ थियोडोर ऑफ मोपसुएस्टिया एण्ड थियोडोरेट ऑफ सायरस” (Antiochene Theōria in the Writings of Theodore of Mopsuestia and Theodoret of Cyrus) (फोर्ट्रेस प्रेस, 2015) पुस्तक के लेखक भी हैं।

डॉ. लैरी ओट्स, मारनाथा बैपटिस्ट सेमिनरी में लम्बे समय से बाइबल के प्रोफेसर (आचार्य) और पूर्व में सन् 2009-2019 तक अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने वाटरटाउन, विस्कॉन्सिन में मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में 40 से अधिक वर्षों तक सेवा की है। मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी से ही स्नातक होने के बाद, उन्होंने सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. की है और वे मौलिकतावाद और बैपटिस्ट इतिहास के विशेषज्ञ हैं।

